अदरक खेती के आधुनिक तरीके : उत्पादकता बढ़ाने की रणनीतियाँ

आदित्य तिवारी[1] एवं श्रेया तिवारी[2]

[1]ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सतना, म0 प्र0.

[2]एम.एस-सी. (कृषि प्रसार) छात्रा, म0 गॉ0 चि0 ग्रा0 वि0, चित्रकूट, सतना, म0प्र0

Email : tiwari.aditya0903@gmail.com

अदरक दुनिया की महत्वपूर्ण मसाला फसल है। अदरक का वानस्पतिक नाम जिनजिबेर ओफिसिनेल है जो जनजीबेरेसी परिवार से संबंध रखता है। इसकी उत्पत्ति भारत में मानी जाती है एवं उत्पादन में भारत का प्रमुख स्थान है। भारत के लगभग सभी राज्यों में अदरक की खेती की जाती है। भारत में हल्की अदरक की खेती मुख्यतः केरल, उड़ीसा, मेघालय, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, आसाम, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमांचल प्रदेश तथा उत्तरांचल प्रदेशों में मुख्य व्यवसायिक फसल के रूप में की जाती हैं। अदरक के प्रकंद का उपयोग किया जाता है तथा इसे सुखाकर सोंठ बनाया जाता है। भारत अदरक के उत्पादन और निर्यात में अग्रणी है। भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्त का एक यह एक प्रमुख स्रोत है। इसकी खेती नगदी फसल के रूप में की जाती है। इसमें कई औषधीय गुण पाये जाते हैं। अदरक खेती के आधुनिक तरीके एवं रणनीतियों को अपनाकर किसान अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं।

मिट्टी एवं भूमि की तैयारी

अदरक की अच्छी पैदावार हेतु जीवांशयुक्त बलुई दोमट मिट्टी, चिकनी या लाल मिट्टी सही मानी गई है। खेत में उचित जल निवास आवश्यक है। मृदा का पी.एच.मान 6-7 अच्छा माना गया है। खेत को तैयार करने के लिये गर्मी के मौसम में एक गहरी जुताई आवश्यक है। इसके पश्चात 3 से 4 जुताई करवाने के पश्चात पाटा लगाकर भूमि को समतल एवं भुरभुरा बना लेना चाहिये। अदरक हेतु फसल चक्र का प्रयोग करना चाहिये।

कंदों की रोपाई हेतु दो क्यारियों के मध्य दूरी 30-40 सेमी एवं 3 मीटर लंबी, 1 मीटर चौडी और 1.5 सेमी ऊची क्यारियॉ तैयार कर लेना चाहिये आवश्यकतानुसार विस्तरों की लम्बाई बढ़ाई घटाई जा सकती है।

जलवायु

यह उष्ण कटिबंध की मुख्य फसल है। अधिक उपज हेतु गर्म जलवायु के साथ-साथ उच्च आर्द्रता उपयुक्त माना गया है। मध्यम से भारी वर्षा वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिये उपयुक्त रहते हैं। इसकी खेती सिंचित एवं असिंचित दोनों अवस्था में की जा सकती है। बुवाई एवं उत्पादन हेतु 24 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान एवं कटाई से एक माह पूर्व शुष्क मौसम एवं तापमान 28-35 डिग्री सेल्सियस अधिक उपज और गुणवत्ता युक्त प्रकंद के लिए सही रहता है।

e-ISSN No. 2583-0937

उन्नत प्रजाति

सुरभि- इस किस्म की औसत उपज 20 से 21 टन प्रति हेक्टेयर होती है। यह फसल 225 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। बढ़वार की दृष्टि से यह अच्छी किस्म होती है। यह प्रकंद बिगलन बीमारी के प्रति सहनशील है। इसमें 4.0 प्रतिशत रेशा, 2.1 प्रतिशत वाष्पीकृत तेल एवं 10.1 प्रतिशत जिंजरिन पाई जाती है। इससे 23 प्रतिशत सोंठ निर्मित की जा सकती है।

सुप्रभा- यह फसल 225 से 230 दिनों में तैयार हो जाती है। इस प्रकंद का सिरा मोटा, छिलका सफेद एवं चमकदार होता है। इस प्रजाति में 22 से 25 प्रतिशत तक सोंठ प्राप्त की जा सकती है एवं इसकी उपज औसतन 165 से 170 क्विटंल प्रति हेक्टेयर रहती है।

सुरूची- यह किस्म हल्के सुनहरे रंग की होती है। इस प्रजाति की फसल 220 दिनो में पक कर तैयार हो जाती है। इसमें 3.8 प्रतिशत रेशा, 2.0 प्रतिशत वाष्पीकृत तेल एवं 9.9 प्रतिशत जिंजरिन पाई जाती है। इसमें 22 से 25 प्रतिशत सोंठ निर्मित की जा सकती है। यह प्रकंद विगलन बीमारी के प्रति निरोध है। इसकी औसतन उपज 110-120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

आईआईएसआर वरदा- इस किस्म की विशिष्ट गुण पीला नीलापन लिए, चपटी अंगुलियॉं, स्केल भूरा होता है। इस प्रजाति में तेल 1.75 प्रतिशत, शुष्क भार 20.7 प्रतिशत, रेशा 3.9 से 4.5 प्रतिशत पाया जाता है। इसकी औसत उपज 210-220 क्विंटल प्रति हेक्टयर होता है। यह फसल 190-200 दिन में पक कर तैयार हो जाती है।

खाद एवं उर्बरक

खेत की तैयारी के समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की 250 से 300 क्विंटल खाद प्रति हेक्टर की दर से अंतिम जुताई के पूर्व मिट्टी में मिला देना चाहिये। इसके अतिरिक्त 80 किलो नत्रजन 50 किग्रा. फास्फोरस एवं 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर डालना चाहिये। फास्फोरश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कूडों में एवं नत्रजन एवं पोटाश को दो भागों में अलग कर बुवाई के 40 से 80 दिनों पश्चात दो बार में टापड्रेसिंग के द्वारा उपयोग करना चाहिये।

बुवाई का समय एवं बीज

यह प्री मानसून वर्षा पर आधारित फसल है। इसकी बुवाई क्षेत्र एवं मौसम के अनुसार अनुशंसाधारित करना चाहिये। सामान्यत' अदरक की बुवाई के लिये अप्रैल-मई का समय उपयुक्त रहता है। सिंचाई की अच्छी व्यवस्था होने पर इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक की जा सकती है। बुवाई वाले प्रकंद कीट पतंगे एवं रोगों से मुक्त होना चाहिये। 2 से 3 गॉठों वाले, 2-2.5 सेमी लंबे बीज प्रकंदों का चयन करना चाहिये। ध्यान रखें की उसका बजन 20-25 ग्राम का होना चाहिये। कतार में एक पौधे से दूसरे पौधे की दूरी 25 सेंमी तथा गहराई 6-7 सेंटीमीटर रखें। बुवाई हेतु एक हेक्टेयर में 15 से 20 कुण्टल बीज प्रकंद पर्याप्त होता है।

बीजोपचार

प्रकदों को बुवाई से पूर्व मैन्कोजेब 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति लीटर) पानी की दर से उपचारित कर लेना चाहिये अथवा 0.5 प्रतिशत क्विनालफास तथा 200 पी.पी.एम. प्लान्टोमाइसिन के घोल में आधे घंटे तक डुबाकर रखें एवं छायादार जगह में सुखा कर बुवाई अथवा रोपण करना चाहिये।

सिंचाई

नमी बनाये रखने हेतु फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिये। रोपण के तुरंत बाद एवं बाद में 10 से 15 दिनों के अंतराल में सिंचाई की आवश्यकता होती है।

पलवार (मल्चिंग)

मल्चिंग अदरक के लिये आवश्यक है। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है एवं खरपतवार में कमी आती है। इससे कार्बनिक पदार्थ मे वृद्धि तथा मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार होता है एवं मिट्टी कटाव में रूकावट आती है। भारी वर्षा से बचव के लिए एवं मिट्टी के बहाव को रोकने हेतु मेंड़ों के ऊपर हरे पत्तों या आर्गेनिक अवशेषों के मल्व बनाना चाहिये। रोपण पश्चात प्रथम मल्चिंग, एवं दूसरी तथा तीसरी मल्चिंग रोपण के 40 एवं 90 दिनों बाद उपयुक्त रहती है।

निराई -गुडाई

अदरक में प्रथम निदाई गुडाई, बुवाई के एक माह बाद एवं दूसरी निदाई गुडाई मल्चिंग के पहले उचित रहती है। इसके पश्चात 45-60 दिन के अंतर में निदाई गुडाई करनी चाहिये तथा घासपात निकालने तथा उर्वरकों के डालने के पश्चात मिट्टी को चढ़ाना चाहिये जिससे यह अच्छी तरह से वृद्धि कर सके। इसके लिये 2 से 3 बार निदाई गुडाई की आवश्यकता होती है।

कटाई

http://www.krishilok.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

जब फसल की पत्तियॉ पीली पड़ जाती हैं और सूखने लगती हैं तो कटाई करनी चाहिये। फसल की कटाई, बुवाई से 6माह अर्थात 130 दिनों बाद करनी चाहिये। सोंठ बनाने के लिये कटाई 240 से 260 दिन बाद करें। देरी से कटाई करने पर फाइबर की मात्रा बढ़ जाती है, तेल की मात्रा घट जाती है एवं प्रकंदों की गुणवत्ता कम हो जाती है। प्रकंदों को कुदाल से निकाल लेते हैं। प्रकन्द को अच्छी तरह घोने के पश्चात सूर्य के प्रकाश में कम से कम एक दिन सुखाकर उपयोग में लाना चाहिये।

अदरक की उपज

अदरक की उपज बीज की प्रजाति, मिट्टी के प्रकार एवं फसल प्रबंधन पर निर्भर करती है। औसतन 150 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक अदरक की उपज प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

अदरक की खेती में आधुनिक तकनीकों के समावेश की उत्पादन में वृद्धि एवं किसानों की आय सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका है। इन तरीकों से कृषि प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और सुसंगत बनाया जा सकता है। सिंचाई के उन्नत उपाय, वैज्ञानिक खेती के तरीकों, उच्च गुणवत्ता वाली किस्मों का चयन और उचित रोग नियंत्रण की रणनीतियॉ अदरक की खेती को लाभकारी बना सकती है। नवीनतम तकनीकों का उपयोग भविष्य में अदरक उत्पादन को और अधिक सशक्त बना सकता है। किसान आधुनिक उपयोग को सही तरीके से अपनाकर अपनी खेती में सुधार ला सकते हैं एवं देश और दुनिया में अदरक के निर्यात को बढ़ावा दे सकते हैं।